

*schöpft sein, vergehen, ausser sich sein* (ग्लानि, खेदे Dhātup.): न मां तमन्न श्रमन्नोत तन्द्भृत् unpersönlich RV. 2, 30, 7. स विज्ञायमानो गर्भपाताम्यत् स तातः कृष्णः श्यावो ऽभवत् तस्मात्तातः कृष्णः श्यावो भवति TBr. 2, 3, 8, 1. आ तमिति रासीत् 1, 4, 4, 2. 2, 1, 9, 3. Çat. Br. 2, 4, 2, 21. Kāṭh. 36, 13. Pañkāv. Br. 12, 41. Kāṭh. Çr. 25, 4, 10. स व्यट्ट्याताम्यत् Kāṭh. 27, 5. Pañkāv. Br. 10, 2. वागनुद्यमाना तताम Çat. Br. 4, 2, 2, 11. यदा वै तातः प्राणं लभते ऽथ स संजिह्वीते ebend. तिलस्तामीस्ताम्यति er hält dreimal den Athem an bis zum Ausgehen desselben Kauç. 88. यस्ताम्यति विसंज्ञश्च शेते Suçr. 1, 120, 16. स फणिवितात्पास्ताम्यन्कोपात् Rāḡa-Tar. 4, 647. ताम्ययुः प्रच्युताः पृथ्व्या यथा पूर्णा नदी नराः । अथगाढा क्वविद्वांसः MBh. 12, 9030. न तु ताम्यति वै विद्वान्स्थले चरति तन्नचित् 9031. (यथा) न च ताम्यति शेकिन R. 2, 52, 25. भरतेन ताम्यता 106, 31. किं ताम्यसि किं च रोदिषि Amar. 7. Glt. 4, 19. ततः सानुशयो राजा ताम्यन्प्रेर्यत मन्त्रिभिः Rāḡa-Tar. 6, 95. 8, 1742. मुञ्जर्बुज्जु ताम्यते Glt. 3, 16. ताम्यमान R. 2, 63, 46. तात erschöpft u. s. w. Çabdārbhaṅkalpataru im ÇKDr. द्यूतात्तस्य किं नाम कितवस्य किं दुष्कारम् Kāṭh. 24, 65. — 2) stocken, unbeweglich —, starr —, hart werden; vom Körper, seinen Functionen und Gliedern: श्वासः Suçr. 2, 497, 14. नेत्रम् 314, 2. 349, 2. दृष्टिश्चोर्ध्वं ताम्यते यस्य गाढम् 493, 11. सुरताततात्तानयनं वक्त्रम् Amar. 3. ताम्यता वदनेन Rāḡa-Tar. 3, 344. खलितशिरीषपुष्पकृन्निरपि ताम्यति यत् (वपुः) Mālatim. 83, 7. कुन्तिरानकृते ऽत्यर्थं ताम्यत्यथ च कूजति Suçr. 2, 318, 11. — 3) begehren, verlangen Dhātup.; vgl. तमत. — caus. तमयति Dhātup. 19, 67. अतामि und तमि P. 6, 4, 93, Sch. ersticken (transil.), der Luft berauben: तमयति Çat. Br. 3, 3, 2, 19. 8, 2, 15. Kāṭh. Çr. 6, 5, 18. West. und Bopp führen nach Rosen folgende Stelle aus dem MBh. (ohne Angabe von Zahlen) auf: पुनर्पुद्गाय संज्ञमुस्तामयतः परस्परम्; MBh. 6, 2120 haben wir dieselben Worte, aber तापयानाः st. तामयतः.

— आ = simpl. 1: तस्य वाताम्यमानस्य तं वाणामकमुद्धरम् । स मामुद्धीह्य संत्रस्तो ऽहौ प्राणान् R. 2, 63, 50; vgl. u. उद्.

— उद् dass.: तस्याथोताम्यतो वाणामुस्सद्धर बलादकम् (vgl. u. आ) R. Gorr. 2, 65, 45. एकाङ्गिभ्यो विभिन्नेभ्यो बिभ्यड् द्विभ्रसंभ्रमः । उदताम्यतथा चित्तानुत्संसंविद्विवाशिषाम् ॥ Rāḡa-Tar. 6, 124. अयि क्दृय — किमेवमुताम्यसि Daçak. 106, 10.

— नि, partic. नितान्त ausserordentlich, bedeutend; adv. in hohem Grade, überaus, sehr, heftig AK. 1, 1, 4, 62. Trik. 3, 3, 354. H. 1506. °बल Pañkāt. I, 139. °लान्तरसराम्लोक्ति R. 1, 5. अवेदयति नितान्तं क्षत्रियरोगम् Sāh. D. 78, 24. न मित्रं कस्यचित्को ऽपि नितान्तं न च वैरकृत् Pañkāt. II, 121. नितान्तं सा विद्यथे Bhāg. P. 4, 8, 45. नितान्तमवमानिता Sāh. D. 48, 10. नितान्तं कृतकृत्यस्य Rāḡa-Tar. 4, 634. Prab. 100, 8. नितान्तकठिना Vikr. 30. °रुक्त 69, 13. Ragh. 3, 8, 35. 8, 41. 14, 43. 18, 44. Kumāras. 3, 4, 7, 17. R. 2, 2. Glt. 12, 17. Prab. 13, 12, 16, 6. 73, 1. Vedāntas. (Allah.) No. 6. नितान्तावृत्त (v. l. नितान्तवृत्त) überaus baumarm gaṇa उत्कारादि zu P. 4, 2, 90. — caus. ersticken (transit.): यदेवास्य वृत्ति यन्नितमयति तदाप्यायति Kāṭh. 24, 9.

— परि bekommen werden: संतप्तवत्ताः सो ऽत्यर्थं ह्यपनात्परिताम्यति Suçr. 2, 447, 7.

— प्र athemlos —, bekommen —, betäubt werden, sich erschöpft fühlen, vergehen, ausser sich sein: प्रताम्यति — प्राणान्प्रतिपद्यते Ait. Br.

8, 22. Suçr. 1, 121, 1. यो ऽतिप्रताम्यन् शसिति प्रसक्तम् 308, 14. 2, 193, 4. न चातपाधसंतप्तः नृत्पिपासाश्रमान्वितः । प्रताम्यति ग्लायति वा MBh. 12, 1224 4. प्रताम्य वा प्रञ्चल वा प्रणश्य वा सकृन्नशो वा स्फुटितो मर्हो व्रज R. 2, 12, 105. — Vgl. प्रतमक, प्रताम्.

— सम् sich aufreiben, sich verzehren: चिरं चेतश्चन्दनचन्द्रमःकमलिनीचित्तासु संताम्यति Glt. 4, 21. — Vgl. संतमक.

तम 1) Endung des superl. Wird Kir. 2, 14 als selbständiges Wort in der Bed. von इष्टतम angewendet. तमाम् häufig als Steigerung an adv. gefügt; vgl. तारतम्य. — 2) m. P. 7, 3, 34, Sch. a) = तमस् in seinen verschiedenen Bedd. Rājam. zu AK. 1, 1, 4, 7 (= तमस् 4.). सत्यं वक्ष्यति ते ऽकस्मादसत्यनीरसं तमा इति वर्षाविवेकः । तथा च ज्योतिषे होरायाम् । भृगुतमबुधजीवैरिति । राक्षी (aber auch im vorhergehenden Beispiele ist तम wohl = राक्ष) यथा कितवस्तमस्येति वराहः । Uggval. zu Uṇḡdis. 4, 188. — b) = तमाल 1. Çabda. im ÇKDr. — 3) f. तमा a) Nacht Trik. 1, 1, 105. H. 142. — b) = तमाल 1. Çabda. im ÇKDr. Phyllanthus emblica (vgl. तमका u. s. w.) Nigh. Pr. — 4) n. a) = तमस् Finsterniss Çabdar. im ÇKDr. — b) Fussspitze Çabda. im ÇKDr.

तमःप्रभा (तमस् + प्रभा) f. N. einer Hölle H. 1360. Varianten: तमप्रभा, तमःप्रभ m., तमप्रभ (Çiva-P. bei Wollh. Myth. 18) m.

तैमक (von 1. तम् m. P. 7, 3, 34, Sch. Bekommenheit, eine bes. Form von Asthma Wise 317. Suçr. 1, 139, 12. 173, 3. 2, 444, 4. 497, 14. 16. 498, 4. 5. — Vgl. प्रतमक.

तमका = तमा, तमालका, °की, तमाली, तमालिनी Phyllanthus emblica Nigh. Pr.

तमङ्गक m. ein flaches und hervortretendes Dach, Plattform, eine Art Balcon H. 1011.

तमर्त्त Uṇ. 3, 109. adj. begierig nach Etwas Sch. — Vgl. तम् 3.

तमन (von 1. तम्) n. das Athemloswerden: आ तमनात् Çāñk. Çr. 2, 7, 7. 4, 4, 17. Kāṭh. Çr. 4, 1, 13.

तमप्रभा s. u. तमःप्रभा.

तमर् n. Zinn H. 1042.

तमराज m. eine Art Zucker Rāḡav. im ÇKDr.

तैमस् n. 1) Finsterniss, Dunkel Naigh. 1, 7. AK. 1, 2, 2, 3. 3, 4, 42, 105.

20, 233. H. 153. an. 2, 581. Med. s. 23. Auch pl. अतारिष्म तमसस्पारम्स्य RV. 1, 183, 6. अगूहृत्तमो व्यचतयत्स्वः 2, 24, 3. 3, 5, 1. ज्योतिर्वृषीत् तमसा विज्ञानम् 39, 7. 4, 51, 2. 7, 73, 1. रजस्तमो मोष गा मा प्र मैष्ठाः AV. 8, 2, 1. 24. 9, 2, 17. तमं आसीत्तमसा गूळकर्मर्धे ऽप्रकृतं संखिलं सर्वमा इदम् RV. 10, 129, 3. नाकरासीत् रात्रिरासीत्सो ऽस्मिन्नन्धे तमसि प्रासर्पत् Pañkāv. Br. 16, 1. Çat. Br. 1, 9, 2, 35. 2, 4, 2, 5. तमोऽन्धये bei Einbruch der Dunkelheit Kāṭh. Çr. 4, 13, 13. पुत्रेण पितरो ऽत्यायन्बहुलं तमः Ait. Br. 7, 13. वनं घोरेण तमसा वृत्तम् Sāv. 5, 76. एकश्चन्द्रस्तमो कृत्ति Hir. Pr. 16. Çā. 111. तमसि प्रसृते Vid. 36. तमस्यन्धे Bhāg. P. 5, 6, 12. तमो ऽन्धम् 1, 2, 3. 4, 19, 34. pl. RV. 2, 17, 4. 23, 2. 40, 2. तिरस्तमसि दर्शतः 3, 27, 13. 5, 80, 5. चर्मैव यः समविद्युत्तमसि 7, 63, 1. 78, 2. AV. 2, 23, 5. 9, 5, 1. अरूपा स्तमसा विभेता Çā. 163. सूचिभ्यैस्तमोभिः Megh. 38. Vom Dunkel in der Hölle, von der Hölle selbst und auch Bez. einer best. Hölle: तमस्यन्धे किल्विषी नरकं व्रजेत् M. 8, 94. तादृशं फलमाप्नोति कुपुत्रैः संतरंस्तमः 9, 161. धर्मेण हि सकृद्येन तमस्तरति इस्तरं 4, 242. सो ऽसंस्कृतं नाम तमः स-